श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

श्री कमल् नेत्र स्तोत्र

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं(ङ्) गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकांतं(ङ्) कमलनयनं, योगिहृध्यानगम्यम्
वंदे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम् ॥3॥

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकीनन्दनाय च ।
नन्दगोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः।।

नमः पङ्कजनाभाय ,नमः पङ्कजमालिने ।
नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ॥

श्री कमलनेत्र कटि पीताम्बर, अधर मुरली गिरधरम् ।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, सांवरे राधे वरम् ।।

कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपी मन हरम् ।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन, चरण सुख नित सागरम् ।।

करत कोलि किलोल निशदिन, कुंज भवन उजागरम् ।
अजर अमर अडोल निश्चल, पुरुषोत्तम अपरा परम् ।।

दीनानाथ दयालु गिरिधर, कंस हिरणाकुश हरम् ।
गल फूल भाल विशाल लोचन, अतीव सुन्दर केशवम् ।।

बंशीधर वसुदेव छैया, बलि छल्यो श्री वामनम् ।
जल में गज को तार दीनो, लंक छेद्यो रावणम् ।।

सप्त द्वीप नवखण्ड चौदह, भुवन कीनो एक पदम् ।
द्रौपदी की लाज राखी, कहां लौ उपमा करम् ।।

दीनानाथ दयालु पूरण, करुणामय करुणाकरम् ।
कविदत्त दास विलास निशदिन, नाम जप नित नागरम् ।।

प्रथम गुरु के चरण वन्दौं, यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा, सेविते शिव शंकरम् ।।

श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम् ।
श्रीराम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर राघवम् ।।

श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम् ।
मच्छ-कच्छ वाराह नरसिंह, पाहि रघुपति पावनम् ।।

मथुरा केशवराय विराजे, गोकुल बाल मुकुन्द जी ।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी ।।

धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहां श्री पति अवतरे ।
धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखा वरे ।।

नवनीत रसिया को जपे निरन्तर, शिव विरंचि मन मोहितम् ।
कालिन्दी तट करत क्रीडा, बाल अद्‌भुत सुन्दरम् ।।

ग्वाल बाल सब सखा विराजे, संग राधे भामिनी ।
बंशी वट तट निकट यमुना, मुरली टेर सुहावनी ।।

रघुवंश उत्तम राघवेश हैं, परम राजकुमार जी ।
सीता के पति ,भक्त की गति, जगत प्राण आधार जी ।।

जनक राजा परन राखी, धनुष बाण चढ़ावै जो ।
सती सीता नाम जाके, राम जी परणाई वो ।।

जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के हृदि नन्दनम् ।
बाल लीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम् ।।

श्री कृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरिचरण को ।
भक्ति अपनी दे दो माधव, भवसागर से तरण को ।।

जगन्नाथ जगदीश स्वामी, बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
द्वारिका के नाथ श्री पति, केशवं प्रणमाम्यहम् ।।